ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 86-88

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

# गॉधी की पत्रकारिता : नैतिक अनुप्रेरणा

डॉ0 वसु चौधरी

सहायक आचार्य पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग इन्दिरा गॉधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय अमरकटेक(म0प्र0) भारत

Received- 05 .02. 2022, Revised- 09 .02 2022, Accepted - 12.02.2022 E-mail: devnim62@gmail.com

***सारांशः–*** *"जिस प्रकार निरंकुश पानी का प्रवाह गॉव का गॉव डूबो देता है। उसी प्रकार निरंकुश कलम का प्रवाह भी नाश की सृष्टि करता है। यदि अंकुश बाहर से आता है तो वह निरंकुशता से भी विषैला सिद्ध होता है। अंकुश अन्दर का ही लाभदायक सिद्ध हो सकता है।" महात्मा गॉधी*

***कुंजीभूत शब्द– निरंकुश पानी का प्रभाव, निरंकुशता, विषैला, अर्द्ध स्वतंत्र रियासत, समाज सुधारक, सर्वव्यापी।***

मोहनदास करमचन्द गॉधी का जन्म भारत के पश्चिमोत्तर प्रान्त गुजरात के एक अर्द्ध स्वतन्त्र रियासत काठियावाड़ा के पोरबन्दर नामक स्थान पर 2 अक्टूबर 1869 को हुआ था। वे भारत एवं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के एक प्रमुख राजनैतिक एवं आध्यात्मिक पुरुष थे। वे एक अनुप्रेरित शिक्षक तथा महान समाज सुधारक थे। सत्य व अहिंसा उनके जीवन का अवलम्ब तथा इसका निरन्तर प्रयोग उनका व्यावहारिक कर्म अनुष्ठान था। उनके जीवन वृत्त को केवल सत्य व अहिंसा के दर्पण में ही देखा जा सकता है। एक सर्वव्यापी आध्यात्मिक सत्ता में विश्वास उनके चिन्तन का मूल तत्व था। लन्दन से अपनी विधि की शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त 24 वर्ष की अवस्था में 1893 में दक्षिणी अफ्रीका वकालत करने गये।

1893 का वर्ष भारतीय इतिहास ही नहीं अपितु विश्व इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। इसी वर्ष स्वामी विवेकानन्द शिकागो में भारत की आध्यामिक गौरव तथा वेदान्त के गूढ़ रहस्यों को वैश्विक फलक पर उदयभासित कर रहे थे। दूसरी ओर महात्मा गांधी दक्षिणी अफ्रीका में अहिंसक क्रान्ति का सूत्रपात कर रहे थे। दक्षिणी अफ्रीका के जोहन्सवर्ग से ही उन्होंने अपने अखबार 'इण्डियन ओपिनियन' का सम्पादन किया। इण्डियन ओपिनियन के सम्पादन से वे दक्षिणी अफ्रीका में एक सफल पत्रकार के रुप में भी प्रतिष्ठित हो चुके थे। यद्यपि की पत्रकारिता उनके जीवन का उद्देश्य नहीं था। उनकी पत्रकारिता में सामाजिक, राजनीतिक तथा आध्यात्मिक विषय समाहित थे। उनकी पत्रकारिता का मूल उद्देश्य सेवा था। उनका मानना था कि पत्रकारिता कभी भी व्यक्ति लाभ या आजीविका कमाने का साधन नहीं होना चाहिए। नैतिकता और स्पष्टवादिता उनकी पत्रकारिता का आधार था, सेवा धर्म था तथा निष्पक्षता उद्देश्य। वर्तमान पत्रकारिता एक संक्रमण काल से गुजर रही है। उसकी निष्पक्षता को लेकर जनसामान्य सशंक्ति है। पत्रकारिता के नैतिक मूल्यों में ह्रास की स्थिति उत्पन्न हो गयी है। ऐसी परिस्थिति में गॉधी की पत्रकारिता का अध्ययन न्यायसंगत था समीचीन प्रतीत होता है।

गॉधी जी दक्षिणी अफ्रीका एक विधि व्यवसायी के रुप में 'दादा अब्दुल एण्ड कम्पनी' के मुकदमे की वकालत करने गये थे।[1] परन्तु यह सुयोग ही था कि वहाँ उन्होंने अपने सत्य व अहिंसा का प्रथम प्रयोग किया और एक सफल पत्रकार तथा सत्य व अहिंसा के पुजारी के रुप में स्थापित हुए। 1915 में जब वे भारत आये तो उनकी ख्याति एक पत्रकार तथा अहिंसक नेतृत्वकर्ता के रुप में फैल चुकी थी।[2] अपने नैतिक सम्बल और कर्मयोग से मानव से महात्मा तक की यात्रा करने वाले गॉधी 20वीं शताब्दी के प्रारम्भिक काल में ही पत्रकारिता को नैतिक, आध्यात्मिक और अनुसंधानात्मक अवलम्ब दे चुके थे। उनमें आत्मबल था। अध्यात्मबल था, नैतिक बल था। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का ही प्रभाव था कि राष्ट्रीय आन्दोलन में 1920 के बाद के युग को गॉधी युग के नाम से जाना जाता है। उन्होंने भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन को जन आन्दोलन का रूप दिया। उन्होंने न केवल राष्ट्रीय आन्दोलन और सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित किया अपितु भारत के भावी प्रगति पथ को निर्देशित व निर्धारित किया। गॉधी जी ने न केवल भारतीय प्रत्युत विश्व पत्रकारिता को उपकृत किया। सत्य के साथ मेरे प्रयोग में उन्होंने पत्रकारिता के उद्देश्य को निरूपित करते हुए लिखा कि–"समाचार पत्र का प्रथम प्रयोजन जन संवेदना को समझना और उसकी अभिव्यक्ति, दूसरा प्रयोजन उनमें आवश्यक भावनाएं जागृत करना और तीसरा प्रयोजन निष्पक्ष, निडर निर्द्वन्द भाव से सार्वजनिक दोषों को उजागर करना।"

गॉधी में पत्रकारिता का अनुराग : गॉधी जी ने अपनी पत्रकारिता का प्रारम्भ दक्षिणी अफ्रीका से किया। अपने नैतिक अस्त्र सत्याग्रह का प्रयोग भी उन्होंने दखिणी अफ्रीका से किया। दक्षिणी अफ्रीका से ही उन्होंने 'इण्डियन ओपिनियन' का प्रारम्भ किया। उनके इस साप्ताहिक पत्र की प्रासांगिकता का अनुमान इससे भी लगाया जा सकता है कि यह पत्र एक साथ चार भाषाओं– अंग्रेजी, हिन्दी, तमिल और गुजराती में प्रकाशित होता था। इण्डियन ओपिनियन में उन्होंने भारतीय भावनाओं को अभिव्यक्त किया। वास्तव में यह साप्ताहिक पत्रिका दक्षिणी अफ्रीकी सरकार की रंगभेदी नीतियों के प्रति भारतीय भावनाओं का उद्गार था। भारतीयता की अभिव्यक्ति थी। इस साप्ताहिक पत्रिका की एक विशेष बात यह थी कि आज के समाचार पत्रों

**अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

की तरह विज्ञापन नहीं छापा जाता था। आज तो समाचार कम विज्ञापन अधिक है। इस पत्रिका को आर्थिक सहयेाग इसके प्रति समर्पित लोगों से होता था। इस पत्रिका में राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक पक्षों का प्रकाशन किया जाता था।[3]

कारण से कार्य होता है। कुछ परिस्थितियॉ, कुछ घटनाएं व्यक्ति की जीवन दिशा परिवर्तित कर देती है। महात्मा गॉधी के साथ भी कुछ अमानवीय व्यवहार हुए जिसने उनकी लेखकीय प्रतिभा को जागृत कर दिया। इसमें पहली घटना थी प्रीटोरिया रेलवे स्टेशन की जहॉ उनको ट्रेन में बैठने से रोका गया। दूसरी घटना प्रेसीडेन्ट क्रूगर के निवास की जहॉ गॉधी जी को पैर से ठोकर मारा गया और तीसरी घटना थी डरबन में उनपर किया गया हमला। इस रंगभेदी व्यवहार ने उनको आहत किया और उनका लेखन उनकी पीड़ा की अभिव्यक्ति बना। 1904 में उन्होंने 75 पौंड की धनराशि से इण्डियन ओपिनियन की शुरूआत किया।[4] बाद में उनके एक पारसी मित्र रूस्तम जी के सहयोग से डरबन में स्थानानतरत कर दिया गया। यह समाचार पत्र भारतीयों में सेवा भाव, भारतीय सामाजिक सन्दर्भों, अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम तथा राष्ट्रवाद की भावना को भी मुखरित करता था।[5]

गॉधी जी का विचार संसार व्यापक था तथा उनका व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे अपने विचारों को जनसामान्य तक पहुॅचाने के लिए ही पत्रकारिता का अवलम्ब लिये तथा एक सफल और सजग पत्रकार के रूप में अपने को स्थापित किये। गॉधी जी का रचना संसार भी व्यापक था। एक पत्रकार के रूप में उनका रेखांकन बहुत विस्तृत नहीं मिलता है। इसलिये उनकी पत्रकारिता पर विचार समीचीन प्रतीत होता है। स्वदेश आने पर उन्होंने कई पत्र निकाले जिसमें 'यंग इण्डिया', हरिजन, नवजीवन, बाम्बे क्रानिकल थी।[6] गॉधी जी के लिए लेखन एक साधन था और सत्य की अभिव्यक्ति उसकीसाधन। गॉधी की पत्रकारिता ने भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में राष्ट्रीय भावना को जागृत करने में अद्वितीय भूमिका का निर्वहन किया। गॉधी की सफल और निष्पक्ष पत्रकारिता के सम्बन्ध में माखनलाल चतुर्वेदी ने लिखा है कि– ''गॉधी से महान सम्पादक कदाचित इस देश में पैदा नहीं हुआ। जिस दिन हमने गॉधी को खोया उसी दिन सारी पत्रकारिता देश भक्ति के धर्म से हटकर राजनीति की अनुचरी बन गयी।[7]

पत्रकारिता को सन्दर्भित करता हिन्द स्वराज : पाश्चात्य राजनीतिक चिन्तन के प्रख्यात मनीषी प्लेटो ने अपनी एक कालजयी रचना का सृजन 'रिपब्लिक' के नाम से किया। इस रचना ने उसे अमर बना दिया। यह रचना संवाद शैली में लिखी गयी थी। भारत में गॉधी की रचना 'हिन्द स्वराज' रिपब्लिक की भॉति ही संवाद शैली में लिखी गयी। यह पुस्तक 'इण्डियन ओपिनियिन में प्रकाशित बीस लेखों की एक लेखमाला थी जो बीस अध्याय में प्रकाशित हुई। यह पुस्तक दो बार प्रकाशित हुई थी। यह पुस्तक इतनी अनूठी, अनुपम और अद्वितीय शैली में लिखी गयी थी कि आज भी उतनी ही प्रासांगिक है जितना अपने लेखन काल के समय। इसने जनसामान्य को द्वेष धर्म की जगह प्रेम धर्म हिंसा की जगह अहिंसा तथा स्वार्थ की जगह परमार्थ का संदेश दिया। हिन्द स्वराज में कुल 85 प्रश्नों के माध्यम से विषय का विस्तृत विवेचन तथा गहन अनुशीलन प्रस्तुत किया गया है। गॉधी जी ने न केवल इसमें समस्या पर चर्चा किया है, प्रत्युत उसके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक पक्ष को भी प्रस्तुत किया।[8]

गॉधी जी ने हिन्द स्वराज में पत्रकारिता को निष्पक्षता के लिए सजग भी किया। वे चाहते थे पत्रकारिता पक्षकारिता से स्वतन्त्र रहे। उनका आग्रह था कि अखबार का एक काम तो है लोगो ंकी भावनाऍ जानना और उन्हें जाहिर करना, दूसरा काम है लोगों में आमुक जरूरी भावनाऍ पैदा करना, और तीसरा काम है लोगों में दोष हो तो चाहे जितनी मुसीबतें आने पर भी बेधड़क होकर उन्हें दिखाना।[9] गॉधी जी ने बंग–भंग (1905) के प्रभावों का समाचार–पत्रों के संदर्भ आकलन करते हुए लिखा है कि 'यह नया जोश टुकड़े होने का अहम नतीजा माना जायेगा। यह जोश अखबारों के लेखों में दिखाई दिया। लेख कड़े होने लग। जो बात लोग डरते हुए या चोरी छिपे करते थे, यह खुल्लम–खुल्ला होने लगी–लिखी जाने लगी।[10] ब्रिटिश राजनीति में समाचार–पत्रों की भूमिका के सम्बन्ध में उन्होंने लिखा है कि 'जो अंग्रेज वोटर है (चुनाव करते हैं), उनकी धर्म–पुस्तक (बाइबल) तो है अखबार। वे अखबारों ंस अपने विचार बनाते हैं। अखबार अप्रमाणिक होते हैं। एक ही बात को दो शकलें देते हैं। एक दलवाले उसी बात को बड़ी बनाकर दिखाते हैं, तो दूसरे दलवाले उसी को छोटी कर डालते हैं। एक अखबार वाला उसी आंग्रेज नेता को प्रमाणिक मानेगा, तो दूसरा अखबार वाला उसको अप्रमाणिक मानेगा। जिस देश में ऐसे अखबार हैं, उस देश के आदमियों की कैसी दुर्दशा होगी?[11] इस प्रकार स्पष्ट है कि गॉधी जी समाचार–पत्रों के दायित्व एवं करनी दोनों के सम्बन्ध में स्पष्ट दृष्टि रखते थे। इसी कारण उनकी पत्रकारिता में वे दोष विद्यमान नहीं थे, जिसके प्रति उन्होंने 'हिन्द स्वराज' में टिप्पणी किया है। उनकी पत्रकारिता लोगों की भावनाओं को व्यक्त करने के साथ ही लोगों में जरूरी भावना पैदा भी करती थी। उनकी पत्रकारिता व्यक्ति एवं समाज के दोषों को स्पष्टतः व्यकत करती थी।

गॉधी की पत्रकारिता के विविध आयाम : कार्यों के संदर्भ में विविधता नूतनता को जन्म देती है। भारत के संदर्भ में

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

यही विविधता एकता का परिचायक है। गॉधी जी की पत्रकारिता के भी विविध आयाम थे। उन्होंने अपने लेखों में जीवन और समाज के सभी पक्षों का अनुशीलन करने का प्रयास किया। किसी एक ही विषय पर नहीं रूके। इस सम्बन्ध में लुई फिशर ने लिखा है कि– 'एक लेख में गॉधी भारत के लिए कैसी आजादी चाहिए इसकी व्याख्या करते थे और दूसरे में मिठाई बनाने के लिए दी जाने वाली चीनी के राशन में कमी की मांग करते थे। तीसरे में अपराध और अपराधियों की समस्या पर विचार करते और चौथे में यह आशा प्रकट करते थे कि स्वतंत्र भारत में सेनाएं रखने के बारे में नियंत्रण में लिया जायेगा। पांचवे में वह यह फैसला करते हैं कि झूठ बोलना किसी भी अवस्था में उचित नहीं हो सकता और सत्य बोलने में किसी अपवाद की स्वीकृति की गुंजाइश नहीं।'' 2 जुलाई 1925 के यंग इण्डिय के अंक में उन्होंने स्वतः आग्रह किया है कि – अपनी निष्ठा के प्रति ईमानदारी बरतते हुए मैं दुर्भावना या क्रोध में कुछ भी नहीं लिख सकता। मैं भावनाओं को भड़काने के लिए भी नहीं लिख सकता। लिखने के लिए विषय और शब्दों को चुनने में मैं हतों तक जो संयम बरतता हूॅ, पाठक उसकी कल्पना नहीं कर सकता। मेरे लिए यह प्रशिक्षण है। इससे मैं खुद अपने भीतर झॉकने तथा अपनी कमजोरियों को ढूंढने का प्रयास करता हूॅ और समर्थ हो पाता हूॅ।'

प्रखर समाजशास्त्री आनन्द कुमार ने अपने लेख 'गॉधी जी संवादी पत्रकार थे' में लिखते हैं कि–'एक पत्रकार के रुप में गॉधी जी किसी भी तरह के दबाव से परे थे। उनके जीवन वृत्त की तरह उनकी पत्रकारिता भी नैतिक और सत्य के आग्रह से संचालित थी। क्षेत्रीय भिन्नताओं क बावजूद उनके लि न तो भाषाएं दीवार खड़ी कर सकी और न ही वर्गीय दबाव उनहें ऐसा करने के लिए बाध्य कर सके।'' भारतीय पत्रकारिता का इतिहास देखा जाय तो, वह भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास से मेल रखती है। भारत में पत्रकारिता देश को साम्राज्यवादी सत्ता से मुक्त कराने के लिए शुरू हुई। और इसी क्रम में अधिकांश ख्यातिलब्ध नेता ख्यातिलब्ध पत्रकार भी थे।

**निष्कर्ष**– अगर गॉधी की पत्रकारिता और वर्तमान पत्रकारिता का तुलनात्मक अध्ययन किया जाय तो कई ऐसे तथ्य उपस्थित होते हैं जो वर्तमान पत्रकारिता के नकारात्मक पक्ष का संकेत करते हैं। वर्तमान पत्रकारिता ऐसे संक्रमणकाल से गुजर रही है कि सिर्फ बौद्धिक वर्ग ही नहीं अपितु एक सामान्य व्यक्ति भी यह कहते हुए सुना जाता है कि अमुक चैनल अमुक राजनीतिक दल का समर्थक है। अधिकांश पत्राकारों की पत्रकारिता किसीन किसी राजनीतिक विचारधारा के साथ खड़ी दिख रही है। वर्तमान पत्रकारिता की निष्ठा किसके प्रति है? पाठकों के प्रति या राजनीतिक नेतृत्व के प्रति, क्या पत्रकारिता समाज को उसके बुराइयों से अवगत कराकर उसके समाधान के दिशा में काम कर रही है या दबाव में काम कर रही है। निष्पक्षता, वस्तुनिष्ठता, नैतिकता, तथ्यपरकता पत्रकारिता के मूल मूल्यों पर कहीं 'पक्षधारिता' प्रभावी तो नहीं हो रही है। गॉधी जी की पत्रकारिता ऐसे ही प्रश्नों का समाधान है। रामबहादुर राय गॉधी की पत्रकारिता का सार इन शब्दों में व्यक्त करते हैं– 'आखिरी व्यक्ति की चिन्ता, बोल चाल की भाषा, अपनी भाषा के प्रति लगाव और नैतिकता यही गॉधी की पत्रकारिता का सार है।'' वर्तमान पत्रकारिता समाज के अन्तिम व्यक्ति की चिन्ता कर रही है या सत्ता के शीर्ष पर बैठे व्यक्ति का। यह विचारणीय प्रश्न है। ऐसे में गॉधी की पत्रकारिता के मूल्यों की उपादेयता और भी आवश्यक और प्रासंगिक हो जाती है। अगर प्रेस को लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करनी है और स्वयं लोकतन्त्र का चतुर्थ स्तम्भ बने रहना है तो पत्रकारिता के मूल मूल्यों को अपनाना और पत्राकारिता के गॉधीवादी मूल्यों का अनुसरण करना आवश्यक हो जाता है। पत्रकार और पत्रकारिता पर देश का वर्तमान और भविष्य अवलम्बित है। राष्ट्र उनकी तरफ उम्मीद से देख रहा है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राजाराम यादव, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन और राजनीति, शेखर प्रकाशन इलाहाबाद 1959 पृ0 149
2. स्वामी विवेकानन्द, अग्निमंत्र, रामकृष्ण मठ, नागपुर, 2003 पृ0 20–25
3. ब्राउन जुडिथ, गांधी प्रिजनर ऑफ होप, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली 1990 पृ0 40
4. वही
5. जोशी, गॉधी विचार और साहित्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2010
6. गोयनका, गॉधी पत्रकारिता के प्रतिमान, सस्ता साहित्य मण्डल नई दिल्ली 2016
7. राजाराम यादव, वही
8. गॉधी, हिन्द स्वराज, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी 2002, पृ0–20

*****